2025

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ९

फरवरी

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. वृद्धो के पास जीवन में प्राप्त किया हुआ अनुभव का..... होता है।
२. कितनी विविधता से भरा हुआ यह ..... है।
३. प्रभु तो मेरु पर्वत जैसे..... रहकर समभाव से सब सहन करते विचरण करने लगे।
४. पद याने अर्थ और .....सहीत का शब्द।
५. प्रवचन यह ..... है।
६. सिद्ध के जीवों का अवगाहना क्षेत्र कितना है यह विचारणा ..... है।
७. प्रायः क्लेश और तंटे बखेडे के पीछे किसी की गलत सलाह या गलत..... होता है।
८. सिध्धो के द्रव्य प्रमाण में अनेक जीव..... है।
९. तेउकाय का आयुष्य तीन..... है।
१०. ..... ललाट को दो हाथों से स्पर्श करते उदात्त स्वर में बोला जाता है।
११. विद्या..... करनी हो तो विद्यागुरु का विनय करना होगा।
१२. शीत उपसर्ग को समभाव से सहन करते हुए प्रभु को ..... उत्पन्न हुआ।
१३. भावप्राण आत्मा के साथ जुड़े है तो द्रव्य प्राण..... के साथ जुड़े हुए है।
१४. ..... आहे भरते हुए भूखा,प्यासा मर गया।
१५. गुरु की साक्षी में प्रगट रुप से ..... करता हुं।
१६. ..... के जीव अमर है।
१७. ..... पूर्व भव में महातपस्वी साधु था।
१८. भोगो के पीछे आने वाले ..... नहीं दिखाई देते।
१९. वाणी में विनय रहा तो ..... होगी।
२०. विशेषज्ञा के अभाव के कारण ही, जीव को असार संसार..... महेसुस होता है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. विश्व के सच्चे स्वरुप का भान हमें किसने कराया ?
२. प्रभुजीने सातवां चातुर्मास कहा पूर्ण किया ?
३. हम किसकी बुद्धि की याचना करते है ?
४. जैन श्रावक की प्राथमिक पहचान क्या है ?
५. कौन से जीव एक समय में उत्कृष्ट १० मोक्ष में जाते हैं ?
६. नाविक का नाम क्या था ?
७. काला चुहा कृष्ण पक्ष तो सफेद चुहा क्या ?
८. आत्मा का द्रव्य प्राणो से वियोग होता है उसे व्यवहारिक भाषा में क्या कहते हैं ?
९. नरक में जैसे उपर जायें वैसे ऊँचाई कैसी होती जाती है ?
१०. विसलदेव के मामा का नाम क्या था ?
११. युगलिक नियमा मर कर कहाँ जाते है ?
१२. पश्चाताप की धारा में कर्ममल धोकर किसकी आत्मा उज्वल हो गयी ?
१३. सिद्ध के सभी जीव किसके उपर विराजमान है ?
१४. पुण्य भोगने के लिए देवलोक है तो पाप भोगने के लिए क्या है ?
१५. जिनशासन में व्यक्ति पूजन का नहीं पर कौन से पूजा का महत्व है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. दंसणं २) पाणा ३) गई ४) अणुजाणह ५) सन्नि ६) नवतत्ता ७) वइक्कमं ८) लोगस्स ९) पुठलीए १०) पुरवयणा
११. अहुक्खाय १२) संजम १३) जकिंचि १४) विगलेसु १५) सत्तहुभवा १६) वइक्कंतो १७) विज्जातं १८) दुग १९) लेसा
२०. भुयचारी

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) साध्वी शिरोमणी	१) सामुद्रिक	६) आवश्यक	६) कोहिनुर हीरा
२) तमाचा	२) सम्यक्त्व	७) सत्ता और संपति	७) त्यागी
३) मुहपत्ती	३) क्रिया	८) पुष्प	८) मुसाफिर
४) आत्मा	४) क्षणभंगुरता	९) वस्तुपाल	९) पडिलेहण
५) बैंत	५) चंदनबाला	१०) क्षायिक	१०) गोपालक

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. एक समय में उत्कृष्ट से कितने जीव मोक्ष में जाते है ?
२. भरत महाराजा कितने खंड के अधिपति थे ?
३. प्रत्येक वनस्पतिकाय का आयुष्य कितना हजार वर्ष है ?
४. वांदणा देते समय कितनी प्रमार्जना होती है ?
५. देव और नारको की उत्कृष्ट स्थिति कितनी सागरोपम है ?
६. पूर्वाचार्यो ने श्रावक के कितने गुण बताए है ?
७. गर्भज मनुष्यो की अवगाहना कीतनी गाउ है ?
८. चौदह मार्गणा के द्वार कितने ?
९. सिद्धशिला कितनी योजन विस्तारवाली है ?
१०. ज्योतिष देव का शरीर प्रमाण कितना हाथ है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. दसवीं लेश्या मार्गणा में मोक्ष है ही नहीं, कारण आत्मा अलेशी है ।
२. करुणासमुद्र प्रभु ने तेजोलेश्या के सामने तेजोलेश्या छोडी ।
३. मनोदंड, वचनदंड, कायदंड आदरु ।
४. भयानक जंगल में मुसाफिर के पीछे जंगली हाथी पडा ।
५. विकलेन्द्रिय जीवो की स्वकायस्थिति नहीं है ।
६. ज - दो हाथ मध्य में चित रखकर स्वस्ति स्वर में बोला जाता है ।
७. सिद्धजीव पुनः संसार में आते हैं ।
८. आज दुनिया में दों को झगडा कर तमाशा देखने में मजा आता है ।
९. जिसे नवकार नहीं आता उसे जैन नहीं कहा जाता ।
१०. प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी २० कोटा कोटि सागरोपम का होता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. विनय को वशीकरण कहते है ।
२. जीवन जीने के लिए जरुरी शक्ति वो प्राण है ।
३. मैं प्रतिक्रमण करता हूं ।
४. यानि सूत्र और अर्थ सत्य है ऐसी अचल श्रद्धा रखना ।
५. पृथकत्व याने दो से नौ ऐसा समझना ।
६. इसलिए वे पापप्रवृति से निवृत होते है ।
७. कितनी असीम कृपा बरसी हमारे उपर ?
८. जीभ मिली तो बोल शकते है ।
९. प्रासुक ऐसे घासचारों से पोषण करने लगे ।
१०. आपके प्रभाव से ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जीव विचार की ३४वी गाथा का अर्थ लिखो । २) तेजी को टकोर काफी, मृगावती का दृष्टांत समझावो ।
३. सुदेव से लेकर कायदंड त्याग की भावना व्यक्त किजीए । ४) सिद्धो के शेष भेदों का अल्पबहुत्व ।
५. कटपूतना का उपसर्ग ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com